M.A. Semester II
Paper 5, unit-3

Topic- Role of images in Thinking
चिंतन में प्रतिमाओं का महत्व

चिंतन के स्वरूप से यह स्पष्ट हो चुका है कि चिंतन एक प्रतिकात्मक प्रक्रिया है। चिंतन में प्रतिमाओं के महत्व पर प्रकाश डाला गया है तथा बताया गया है कि चिंतन में प्रतीकों के रूप में प्रतिमाओं का उपयोग किया जाता है।

प्रतिमा प्रत्यक्षीकरण के पूर्व की क्रिया है जो प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है किसी ज्ञानवाही उत्तेजना की अनुपस्थिति में उसके पूर्व संवेदनात्मक अनुभवों की मानसिक छवि को ही प्रतिमा कहते हैं। (An image represents previous perception. It is a mental copy of a sensory experience in absence of the sensory stimulus) चिंतन में प्रतिमा चिंतन की प्रक्रिया को मध्यस्थ प्रकार के रूप में प्रभावित करता है क्योंकी यह समस्या और प्रतिक्रिया के बीच सादृश्य स्थापित करने में सहायक होता है जैसे, एक गणितज्ञ गणित संबंधी समस्याओं पर ज्यामितिक प्रतिमाओं की सहायता से सोचता है और एक संगीतज्ञ ध्वनी प्रतिमाओं की सहायता से।

अनेकों दार्शनिकों का मत यह है कि- प्रतिमा और विचार एक ही है

Page 2

ग्लैरो ने माना है कि प्रतिमा मूल वस्तु का हू-ब-हू रूप होता है लेकिन उसका आकार मूल वस्तु से छोटा होता है परन्तु सही अर्थ में प्रतिमा प्रत्यक्षीकरण की तरह ही स्नायुतंतुओं में विशेष प्रकार की क्रिया प्रतिरूप का ही प्रतिफल है यह कभी मूल वस्तु की सच्ची प्रतिलिपी नहीं होती है साथ ही प्रत्यक्ष वस्तु की अपेक्षा प्रतिमा अस्पष्ट होती है।

प्रतिमा अनुभव में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। कुछ लोगों प्रतिमाएँ चाक्षुष में पायी जाती है और कुछ में इनका अभाव पाया जाता है। प्रतिमाओं की स्पष्टता में भी अंतर पाया जाता है कुछ लोगों की प्रतिमाएँ दूसरे से स्पष्ट होती है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिमाओं को अलग-अलग प्रकारों में बाँटा गया है। जो निम्न लिखित है। (इंगलिश, वोर्डिंग, लैंगफील्ड एवं वेल्ड) के अनुसार इसे पाँच भागों प्रकारों में बाँटा गया है।

(1) अनुबिंब (After image) – इसे सही अर्थ में प्रतिमा की संज्ञा नहीं दी जा सकती यह अनुसंवेदना है जिसका अनुभव थोड़ी देर पहले देखी गई उत्तेजना के हटने के कुछ समय बाद भी बरकरार रहती है। इसका कारण यह है थोड़ी देर पहले जिस उत्तेजना का अनुभव किया गया था ज्ञानेन्द्रिय में

उस उत्तेजना का प्रभाव बना रहता है।

(2) स्मृति प्रतिमा (Memory images) — किसी पूर्व अर्जित ज्ञान को लगभग उसके वास्तविक रूप में प्रत्याह्वान करना स्मृति प्रतिमाओं की सहायता से ही संभव होता है इस प्रकार की प्रतिमाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ऐसी प्रतिमाएँ पूर्व परिचित प्रतीत होती हैं अथवा पूर्व की घटना जानी-पहचानी मालूम पड़ती हैं ऐसी प्रतिमाएँ मौलिक होती हैं। स्मृति प्रतिमाओं का संबंध किसी जाने पहचाने पूर्व की घटना से रहता है।

(3) संमूर्त या प्रत्यक्ष प्रतिमा (Eidetic images) कुछ लोगों में प्रतिमाओं का अनुभव इतना स्पष्ट होता है जैसे वे वास्तविक वस्तु को अपने आँखों से देख रहे हो ऐसी प्रतिमाओं को ही संमूर्त या प्रत्यक्ष प्रतिमा कहते हैं ऐसी प्रतिमाओं का अनुभव कम उम्र के बच्चों में अधिकतर देखा जाता है शायद यही कारण है कि बच्चे प्रत्यक्ष वस्तु और उसकी प्रतिमा में कोई अंतर नहीं कर पाते। उम्र बढ़ने के साथ साथ प्रत्यक्ष या संमूर्त प्रतिमा का अनुभव घटने लगता है।

(4) काल्पनिक प्रतिमाएँ (Imaginative images) प्रतिमाएँ जो पूर्व में अनुभूत वस्तुओं के प्रतीक नहीं होतीं। यदि कोई व्यक्ति चाँद पर रहने वाले व्यक्तियों के बारे में कुछ वर्णन करता है, तो यहाँ पर वह काल्पनिक प्रतिमा का ही उपयोग करता है।

(5) हिप्नागॉगिक एवं हिप्नोपोम्पिक प्रतिमाएँ Hypnagogic and Hypnopompic images) कुछ व्यक्तियों को उनींदावस्था में कुछ खास

Page 4

प्रकार की स्पष्ट प्रतिमाओं का अनुभव होता है। ऐसी प्रतिमाओं का अनुभव प्रायः जागृत एवं सुषुप्तावस्था की बीच की अवस्था में होता है। ठीक इसी प्रकार सुषुप्तावस्था और जागृत अवस्था के बीच में भी कुछ विशेष प्रकार की प्रतिमाओं का अनुभव होता है उसे ही हिप्नोपॉम्पिक प्रतिमा कहते हैं। पूर्व वाले को हिप्नागॉगिक प्रतिमा कहा जाता है। ऐसी प्रतिमाएँ दृश्य, श्रवण, गति संबंधी, गंध या स्वाद किसी भी ज्ञानेन्द्रिय से संबंधित हो सकती हैं ऐसी प्रतिमाएँ प्रायः मादक द्रव्य के सेवन करने के फलस्वरूप विचित्राकार प्रतिमाओं के समान होती है।

कुछ लोग ऐसी विलक्षण प्रतिमाओं का उपयोग उच्चतर रचनात्मक कार्यों में भी करते हैं जैसे सोते समय अथवा जागते समय किसी कवि के मस्तिष्क में कोई एक काल्पनिक प्रतिमा उभरती है और वह उसी क्षण उस प्रतिमा की सहायता से एक कविता की रचना कर डालता है। जुविल वर्नेशिल ने सोते समय एक ऐसी यंत्र की कल्पना की, जिसमें किसी व्यक्ति के सुषुप्तावस्था में ही उसके मन में आने वाले विचारों को अंकित किया जा सकता है इस कल्पना के आधार पर ही निमोग्राफ नामक यंत्र का आविष्कार हुआ।"

Kumar Ratis

Maharaja College, Ara"